सिरमौर जनपद के जनजीवन में वर्ष भर के मौसमों के अनुरूप लोक संगीत एवं लोक नृत्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

SYNOPSIS

SUBMITTED TO THE ETERNAL UNIVERSITY, BARU SAHIB

IN PARTIAL FULFILMENT OF THE REQUIRMENTS

FOR THE DEGREE OF

Ph. D

IN MUSIC

BY

VANDNA SARAIK

[BS17PAMU001]

AKAL COLLEGE OF ARTS AND SOCIAL SCIENCES

ETERNAL UNIVERSITY

BARU SAHIB, HIMACHAL PRADESH-173101 (INDIA)

NAME OF THE STUDENT	**:**	**VANDNA SARAIK**
REGISTRATION NUMBER	**:**	**BS17PAMUOO1**
MAJOR SUBJECT	**:**	**MUSIC**
NAME OF THE MAJOR ADVISOR	**:**	**DR. PURVI LUNIYAL**
NAME OF THE DEPARTMENT	**:**	**DEPARTMENT OF MUSIC**
NAME OF THE COLLEGE	**:**	**AKAL COLLEGE OF ARTS AND SOCIAL SCIENCES**

1. शीर्षकः(Title)सिरमौर जनपद के जनजीवन में वर्ष भर के मौसमों के अनुरूप लोक संगीत एवं लोक नृत्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

2. भूमिका (Introduction)

सिरमौर जनपद हिमालय के पश्चिम में कश्मीर की मनोरम घाटी के साथ हिमाचल प्रदेश का खूबसूरत जिला है जो कभी रियासत रही है लेकिन सिरमौर की प्राकृतिक सुन्दरता गिरीगंगा के पवित्र जल के साथ सतियुग का प्रमाण श्रुति और स्मृति से गाया गीतों में विरासत में पीढ़ी दर पीढ़ी देव परम्पराओं की छत्र–छाया में यथावत रहा है जो आज विलुप्त हो रही सांगीतिकी की शैली है। गिरी नदी कुपड़ धार से उदित जल धारा है। कहा जाता है कि एक साधु स्वर्ग से अपने कमण्डल में गंगा का जल लाया, वह कमण्डल कुपड़ में गिरा और आकाशवाणी हुई,''गिरी गंगा'' यह नदी कोटखाई होती बलग के पास सिरमौर में प्रवेश करती है। बलग में बलीराजा को वामन भगवान ने पाताल का राज्य दिया था जो गाथा गीतों में इस काल का संदर्भ है। इसी प्रकार बलीराज व वामन अवतार के टूटे–फूटे पद मिलते हैं। जो उस करन की गाथा व्यक्त करती हैगिरी नदी पलाशला यशवंतनगर के पास से सिरमौर में प्रवेश करती है और सिरमौर केदो भाग गिरी वार और गिरी पार बनाती है। माँ रेणुका और परशु देव की तपोस्थली है जो त्रेता युग की कहानियों को गाथा गीतों में पिरोये हैं। द्वापर में कुरूक्षेत्र से पांडव समर्थक पाशड पाशी और कौरव समर्थक सैनिक शाढड शाठी राजपूत यमुना की राह डाक पत्थर से गिरी गंगा के दोनों ओर बस गए और लड़ते रहे। हारे, वारे, साके, प्वाडे,

रामायण, पडवायण, कन्हैया, पाजड़े, असंख्य, गाथा गीतों को यहाँ की मूल जातियाँ गन्धर्वों और बाजीगियों ने लोक साहित्य का श्रुति और स्मृति से खजाना सजोया और जन्म से मृत्यु तक तथा सुबह से शाम, बसन्त से शिशिर तक और प्रत्येक क्षण को सांगीतिकी के साथ देव मन्दिरों के संरक्षण में संबंधित किया। कलियुग में 11 शताब्दी में शिरगुलडूम देवता गुगापीर भी इस क्षेत्र में हुए जिनका लोककवियों में गायकी से वर्णन किया है। सिरमौर कभी कालसिया से लेकरथरोच तक रियासत थी लेकिन सिरमौर के गिरी वार और गिरीपार के क्षेत्र आज भी प्राचीन संस्कृति की धरा है। जिसमें गिरी वार का क्षेत्र शिलाई तौस से लेकर पाताल नदी की सीमा तक मौलिक संस्कृति को देव परम्पराओं के साथ जैसे–तैसे बचा के रखे हैं।

वर्ष भर के मौसमों के अनुरूप लोक संगीत एवं लोक नृत्य का संक्षिप्त परिचय

जब मानव ने पेड़–पौधों गुफा के सहारे से आगे कदम बढ़ाया और मानव लोक की स्थापना की वहीं से हमारा लोक संगीत भी उमड़ा और श्रुति और स्मृति से आगे विकसित हुआ। सुबह से शाम, जन्म से मृत्यु, तथा बसन्त से शिशिर तक के मौसमों का एक–एक पल सांगीतकी के साथ लोक साहित्य को गीत, गाथाओं और ताल तथा नृत्य के साथ अभिव्यक्त करते रहे हैं। मेरा विषय है वर्ष भर के मौसमों के अनुकूल लोक संगीत एवं लोक नृत्य का अध्ययन। पहले हमें वर्ष भर के मासों और मौसमों के बारे में लोक पचांग को समझना पड़ेगा। वर्ष भर मासो के नाम इस प्रकार हैं – चौईच, वशेह, जेठ, शाड, श्रावण, भोज, शोउज, काते, मंगशर, पोश, माग, फागुन।

शीष्ट पंचांग–चैत्र, वशोष, जेष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भादो, अशोज, कार्तिक, मार्गशिर, पोष, माग, फाल्गुन,

इन बारह मासो को हम लोक पंचांग में 6 ऋतुओं में दर्शाते हैं। जिसका अध्ययन लोक सांगीतिकीके साथ मौसमों के अनुरूप किया जाना है।

1. रसेलदी डाली रे रीत – बसन्त
2. तौन्दी – ग्रीष्म
3. चमासा – बरसात

4. शौरा – शरद ऋतु

5. शोडगी – पतझड़

6. हिउद – शीतकाल, शिशिर

बसन्त (रसेलदी डाली रे रीत)–में चैत्र गान मंगलाचरण,बीशु नृत्य गायन इन मासों का लोक रंग व लोक रंजन है, जिसका विस्तृत अध्ययन किया जाएगा बसन्त का ठोडा त्रिविधा नृत्य, नाटय व क्रीड़ा इस मौसम की अनमोल सांगीतिकी की कड़ी है। इस मौसम की अनमोल सांगीतिकी की कड़ी है। रथेवाला, ताल, रौत्रताल नाटी का 12 मात्रा का रूप है चैत्र मास बारामासा गायन व नृत्य गाँव–गाँव जाकर नव वर्ष की मंगलमय कामना करना इस मौसम की लोक संगीतमयी व्यवस्था है। इस सार्थक व सटीक प्रमाणों से विश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु हर वादी में जाकर अध्ययन करना विलुप्त हो रही विधाओं को खोजना मेरा उद्देश्य है।

तौन्दी (ग्रीष्म ऋतु)– का गायन व नृत्य जेष्ठ अषाड़ में जब सूखा पड़ता है तब रात को भेष बदल कर सादटू नृत्य गायन वरूण देव से वर्षा की गुहार इस मौसम का नृत्य है। इस मौसम में मक्की की बिजाई गुड़ाई होती है। इस मौसम का गायन वादन व धान की रोपाई के गीत हलायंटी हल जोतने के गीतों को खोजना व उसे तरतीब देना उद्देश्य है।

रिहाल्टी गायन व नृत्य चौमासा (वर्षा ऋतु)की लोक गीतशैली में मौसमों का रंग कलाकार उभारते हैं। माला नृत्य में 16 मात्रा की ढीली नाटी का गायन नृत्य व इस मौसम का 3 रंग है दीपक नृत्य, कृष्ण जन्म अष्टमी का कन्हैया गायन नृत्य तथा डगैली नाच गायन भी इस मौसम का आकर्षण है।

शरा– शरद ऋतु को कहते हैं। इस मौसम में तावली नाटी स्वांग कराने दिवाली व इकादशी मेलों के नृत्य शरद के मौसम को गान करते हैं हुशु नृत्य शरद नवरात्रे से दिवाली तक एक अनोखा रात्रि का नृत्य है जब रात को हर गांव में हुशु फिराए नचाए जाते हैं हर गाँव के युवा चीड़ के पतली व मशाल जलाते हैं।

पतझड़ (शडगी) का नृत्य वूड़ा गायन है दिवाली के एक मास बाद बूढ़ी दिवाली मनाई जाती इस रात्रि को आग के सामने बूड़ा इतिहास गाथा गीत हारे, वारे, साके, प्वाडे, गाने का चलन सिरमौर में है जिसे गहनता से अध्ययन कर शोध किया जाएगा।

शीतकाल–(हिउद) में रात भर पडवायण, रमायण व भारथों गाने का चलन है और मुन्जरा नाटी गाते हैं। मुन्जरा हर मौसम की शाम को रंगीन व मनोरंजन प्रदान करते हैं।

2.1 **गुंजाइश (Scope)**– इस देव परम्परा से जुड़ी अथासम्पदा से वर्ष भर के मौसमों के अनुकूल लोक संगीत व लोक नृत्य के शोध का विषय एक नया अद्वितीय विषय है। यह तथ्य है कि इस पर अभी तक कोई कार्य नही हुआ। इस विषय के अन्तर्गत बहुचर्चित लोकगीत, नृत्यमाला–बसन्त के बारामासा और ठोडा विविधा, ग्रीष्म के गीत, बरसात के मौसम में रिहाल्टी माला, गीत–नृत्य, शरद के हुशु स्वांग व करियाला तथा पतझड़ में बूढ़ी दिवाली के पर्व पर हारे, वारे, साके, प्वाडे और भारथो व पाजड़े को देव पर्व के गीतों के गाने का चलन है, जो देव आस्था से आज भी प्रचलित है केवल तरतीब में संजोना व अपेक्षित है तथा खोज के लिए बड़ी गुंजाइश है।

2.2 **शोध का महत्व(Significance)**– शोध का महत्व जहाँ प्राचीन लोक शैली अमूल्य विधाओं तालों, व लोक शैली अमूल्य बहुविधाओं तालों व लोक नाट्य की मौलिकता को उजागर करेगा वहीं असंख्य गाथा गीतों की साहित्यिक व्यवस्था और कलात्मक संकलन तथा शिक्षात्मक पहलू व विभिन्न गीतों रिवाजों को मौसमों के अनुकूल प्रस्तुति में आकर्षक भी होगा। इस गाथा गीतों में बलिदानों, बहादुरी का चित्रण भी नज़र आएगा। विलुप्त हो रही तरह–तरह की लय व बंदिशों की जानकारी भी उपलब्ध होगी।

2.3 **शोध का उद्देश्य (Objectives)**–मौसमों के अनुकूल लोक गीतों वादन क्रिया एवं नृत्य का पारम्परिक स्वरूप अनुसंधानात्मक तरीके से संकलित करना अपेक्षित है जिसके लिए विभिन्न वादियों गिरी–वार और गिरी–पार में जाकर देव परम्पराओं से जुड़े इस महत्वकांक्षी कार्यक्रम को सटीक प्रमाणों से खोजने का प्रयास किया जाएगा।

- विभिन्न गीतों गाथा की ताल तथा साहित्यिक क्रम को निखारना।

- संकलित लोक गीतों को स्वरलिपिबद्ध कर उनमें प्रयुक्त होने वाले रागों एवं तालों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना ।

- संकलित गीतों का, सिरमौर जिलें के इलाकों में प्रचलित सम्बन्धित गीतों एवं परम्पराओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना।

- अतीत और आज इस लोक संगीत की स्थिति की समीक्षा कर यदि इसमें परिवर्तन आया है या पाश्चात्य छाया पड़ी है उसे भी पहचान अध्ययन कर मौलिकता में पिरोते शोध करने का प्रयास होगा।

- संकलित किए गए गीतों एवं नृत्य को ऋतु के अनुसार वर्गीकृत करना।

3. **अपेक्षित नवज्ञान(Expected New Knowledge)**–इस विषय पर कोई कार्य नहीं मिलता यद्यपि सिरमौर जनपद के लोक संगीत लोकनृत्य पर यदि कार्य हुआ है उसमें मौसमों के अनुसार वर्गीकृत अनुसंधान नहीं हुआ।

- प्रस्तुत शोध में विभिन्न मौसमों में गाए बजाए जान वाले जिन गीतों एवं नृत्यों के पारम्परिक स्वरूप पुनः उजागर होंगे, वह तालिका–1 में दिए गए हैं।

- लोक गीतों का सांगीतिकी अध्ययन अर्थात् उनमें प्रयुक्त होने वाले तालों का विश्लेषण नव ज्ञान होगा।

- विलुप्त गाथाओं पाजड़े आदि का शास्त्रयुक्त प्रारूप सामने आएगा।

मौसमों के अनुसार वर्ष भर के लोक संगीत व लोक नृत्यों की तालिका संक्षेप में

बसन्त (रसैलदी डाली रे रीत) चैत्र– वैशाख	ग्रीष्म ऋतु तोन्दे ज्येष्ठ अषाढ़	वर्षा ऋतु चमासा श्रावण भादो	शरद ऋतु अशोज़ व कार्तिक शरा	पतझड़ शडगी पोष	शिशिर हिउद माग फाल्गुन
गीत नृतकारी सेरारी बाधो राजे रामचन्द्र दशरथ रे घरे बाजे बधाई। फुलदी रीतडी आई बरमाओं एक शुभ मंत्र पहाड़ी में सीस जंगल में–झूरी गान अनिबद्ध गायन भेड बकरी चराते चैत्र वैशाख बीशु मेले गीत ओरो दे मेरो डागरू, 12 मात्रा की नाटी रौद्रताल रथेवाला ताल पर ठोडा त्रिविधा नृत्य, नृत्य नाट्य क्रीड़ा सांगीतिकी के साथ	सादटू नृत्य गायन साटटु ठोडे दो भाई भीच्छैया देओ मेरी माई। हल चलाते बिजाई करते हुए गीत जैसे– गेहूं का विजणा किशा हुआ रे गेंहू यूँ बीजा भू बीजा, गुड़ाई गीत जैसे– ओरे आओ भाभीए गाड़ दे बोआरे झूरी जवाब सवाल में सामायिक गीत रचना मोण गीत	रिहाली माला नृत्य समान कदम ताल की अभिव्यक्ति गीत 16 मात्रा की दोनों नाटी, बोल टोवे जा मेरे टीलुआ, मर्चों। 8 मात्रा की नाटी में माला रिहाल्टी नृत्य गीत के बोल– सूने के छतरे रूप के डाण्डे भाण्जी राण्डे तु चाले पावणे पाण्डे। डगैली नृत्य गायन	नवरात्रे से स्वाग करियाला, सीटू नृत्यु गीत के बोल–बोणो रे शोभो भाई, हुशु नृत्य। हाथ में मशाल फिराने। साहब का स्वांग रिडकु बशीडकू स्वांग, साहूकार का स्वांग। व गीत के बोल– साहू कारडे ने आए वधू चाकरेनी आए।	बूढ़ी दिवाली उत्सव मास भर बूढ़ा इतिहास हारे, बारे, साके प्वाडा पाजड़े का गायन एक बड़ी आग के सामने बूढ़ी दिवाली के पर्व पर गाथा गीत है। पाजड़े शिरगुलरा पाजड़ा, देवी रा पाजड़ा	लोक रमायण पडवायण भारथो गायन

4. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन(Review of Literature)– संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन में डॉ0 कृष्णलाल सहगल जी का लघुशोध (एमफिल) जो (1985) में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से किया है। वर्ष भर के मौसमों के अनुकूल लोक संगीत के बारे में कुछ नहीं दर्शाया गया है उनका लघु शोध सिरमौर जनपद के लोकगीतों में राग छाया था। डॉ० कृष्णलाल सहगल जी 1992 के पी०एच०डी० के शोध का विषय था। सिरमौर के लोक संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन! इस शोध में भी मौसमों के अनुकूल लोक संगीत का हवाला नहीं दिया गया।

सिरमौर नृत्यों गीतों का सांगीतिकी अध्ययन लघु शोध प्रबन्ध में लेखक (रमेश दत्त शर्मा, 1991) ने केवल सिरमौरी नृत्यों में गाए बजाए जाने वाले गीतों का सांगितिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसमें नृत्य शैली का विश्लेषण नहीं किया गया।

डॉ0 नीरजा सहगल (2000–2001) ने सिरमौर जनपद के अनिबद्ध शैली के गीतों का वर्णन प्रस्तुत किया है जिनमें मौसम से संबंधित केवल एक–दो गीत ही सम्मिलित होते हैं।

देवराज, 2016 ने सिरमौर के सीमावर्ती क्षेत्रों के लोक गीतों पर अधिक विश्लेषण किया है तथा सिरमौरी लोक गीतों का अध्ययन केवल प्रभाव की दृष्टि से प्रस्तुत किया है।

विलुप्त हो रही विधाएँ व लोक संगीत की अमूल्य धरोहर को समेटना व अनुसंधान कर सही रूप से प्रस्तुत करना मुख्य कार्य है जो आज तक विद्वानों की नज़रों से अछूता रहा।

डा. कृष्ण लाल सहगल (1985) के अनुसार सिरमौर एक प्राचीन सांस्कृतिक पर होने के कारण लोक साहित्य एवं लोक संगीत से समृद्ध क्षेत्र है इस जिल लोकगायकों के अनाम रचियता का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता । यहाँ के लोगों के कंठ से उगी मधुर सुरली रचनाओं पर राग की छाया दृष्टिगोचर होती है सिरमौरी लोक गीतों में विभिन्न विशिष्ट परम्पराओं से सागेतिक दृष्टि से बहमुल्य नीधि हैं जो आज विलुप्त हो रही है।

डा. गौत्तम शर्मा व्यथित 2012 के अनुसार लोक संस्कृति में संस्कृति शब्द के साथ लोक शब्द जुड़ा है जो सहज स्वभाविक आदिम, निश्चल तथा आम आदमी को बोधक हैं । इसकी अपनी जीवन चर्चा हैं । लोक परम्पराएं, रहन–सहन, रीति रिवाज जिनमें प्रत्येक व्यवहार को पहचान देता है । ये रीति–रिवाज इतिहास काल तथा अन्य प्रभाव से प्रभावित होते हुए भी नहीं नजर आते । कांगड़ा जनपदीय सांस्कृतिक साकेतिक परिचय देना भी उसी आधार पर अपेक्षित हैं जो यहाँ के ऐतिहासिक अवशेषों पौराणिक व लौकिक आख्यानो देवी–देवताओं पर, आस्थाओ–रीतिया। जातरा–मेलो, रहन–सहन, खान–पान खेल तमाशो मनोरजन अभिरूचियों के लोकगीतों नृत्या नाट्यों में प्रचलित या स्मृति रूप से आज भी दृष्टिगोचर है। कथा कहानी, गाथा, नाट्य, वार, ढोलक या किसी लोक रंजक माध्यम से देखने सुनने को मिलता हैं ।

डा. विजय कुमार 2012 के अनुसार विलुप्त पहाड़ी संस्कृति में तीन प्रकार की लोक–गीत शैलिया होती हैं जिनमे उनमुक्त काव्यशैली के विचार जीवन के पहलूओं पर व्यक्त किए जाते है? ये चाट फर्म में महिलाएं शादी के उत्सव में मिलकर गाती हैं । इसमें चार प्रकार का नृत्य मशहूर है जिसे नाटी कहते हैं । लोक वृताकार पे चार प्रकार की ताल पर नृत्य करते हैं।

डा. सूरत के 2015 अनुसार हिमाचली लोकनाट्य का प्रमुख पात्र–चंदौली हिमाचल के सभी लोक नाट्य में चाहे कुल्लु का हरण हो, चम्बा का हरणातर, किन्नौर का होरिगफो, मण्डी का बांठडा, कांगड़ा का भगत बिलासपुर धाजा तथा शिमला, सोलन, सिरमौर का करियाला हो सबका मुख्य उद्देश्य मनोरंजन के साथ नृत्य हास्य व्यंग्य की प्रस्तुति होती हैं। अतः सभी नाट्य में महिलापात्रों का दर्शकों के लिए विशेष आकर्षण है। चद्रोली इन लोक नाट्य की पहली प्रस्तुति पूजा अर्चना के साथ की जाती है। सिरमौर में चंद्राली की प्रस्तुति के साथ करियाला ताल बजाया जाता है।उसके बाद पूरी रात भर स्वांग नृत्य गायन हास्य के साथ कलाकार प्रस्तुत करते हैं।

टिका राम शाह 2016 के अनुसार जीसार बावर के ऐतिहासिक सन्दर्भ में सिरमौर कालसिया से लेकर थरोच तक सिरमौर रियासत रही हैं । परिणामस्वरूप जौसर बावर

की संस्कृत साथ मिलती–जुलती हैं यहाँ की त्यौहार पुरानी दिवाली बडिया मोराज बीशु का मेला जातर मेले चैत्र की अष्टमी नवरात्र बादा कामोण नृत्य हैं जिसे सिरमौर के शिलाई क्षेत्र में मनाया जाता है। यहाँ के बाद्ययन्त्र सिरमोर के भान्ति हैं जिसमें ढोल दमामा रणसिंगा भाऐणा, बाणा, ढोलकी, लाक ढाकणी, शहनाई, करनाल, डफली, खजरी, हणक आदि जिसका प्रयोग विभिन्न पदा मलाका रंजन हेतु किया जाता है यहाँ के पूजे जाने वाले देवता महास शिरगुल, त्रिलोकपुर की देवी बिजटहै। जीसार बावर की नृत्य पोशाके व विभिन्न लोक रंजन प्रस्तुतियाँ भी सिरमौर के समान हैं ।।

5. तकनीकी कार्यक्रम (Technical Programme) तकनीकी कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दुओं पर गहन अध्ययन पर कार्य करने का प्रयास है।

- **प्रयोगात्मक के अनुसार** सभी लोक संगीत की विधाओं पर कार्य किया जाना है। इसलिए कार्यक्रम को अन्जाम देने के लिए सिरमौर जनपद के गिरी वार और पार के क्षेत्रों में श्रुति और स्मृति से बुर्जुग, पुश्तैनी कलाकारों से उनके क्षेत्रों में जाकर आयोजन की प्रक्रिया और गायन शैली की प्रस्तुति की भी परख कर व्याख्या की जाएगी। गिरी वार का क्षेत्र नारग, मानगढ़, चन्नावग, सराहा की धारटी, नाहन, पांवटा साहित में पंजाबी, हरियाणवी संस्कृति का प्रभाव है। इस क्षेत्र में त्रिलोकपुर का मेला होला मेला पावटा तथा बावन द्वादशी सराहाँ आधुनिक रूप से मनाते है । केवल नारग, मानगढ़ आदि क्षेत्रों दिवाली में करियाला और कुछ मौसमी फसलों के गीतो के गाने की प्रक्रिया है।

  गिरीपार का क्षेत्र तीस नदी शिलाई. हरिपुरधार, नौहराधार, राजगढ़ पझौता की वादियों सहित रासूमन्दिर के क्षेत्र में वर्ष भर के सभी पर्वो को मनाने की प्राचीन विधा हैं। उन गाँव में जाकर गहनता से अध्ययन किया जाएगा । गीतों की आडियो, वीडियो ग्राफी कर स्वरलिपि तैयार कर लेखन किया जाएगा।

- **स्थान (Location)** सीमावर्ती के इलाकों में मौसमों से सम्बन्धित गीतों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना आपेक्षित है।

सभी मौसमों के अनुसार पारम्परिक गीतों का स्वरूप उन वादियों के गाँव का नाम गिरी आर और गिरीपार के क्षेत्रों में आयोजित मेलो पर्वो में उत्सव के नाम कार्य किया जाना है।

जैसे हाब्बन का बीशु, शिलाई का मौण, बरसात में गिलीय की रिहाली. नौरे कुन्धल की दिवाली.। कोटोगढ़ा की बूढी दिवाली देवठी की एकादशी मेला बहुत से उत्सवों का वर्णन भी तकनीकी आधार से किया जाना है।

कार्यप्रणाली (Methodology) गिरी वार और गिरी पार की वादियों में आयोजित देव पर्वो मेलो में जाकर सम्बंधित गांव के बुर्जुग कलाकारों महिलाओं से मौसमों के अनुसार लोक संगीत के बारे तथा नृत्य अभिनय की मौलिकता की अभिव्यक्ति ताल वादको से उस समय विशेष पर साक्षात्कार किया जाएगा।

रिकॉर्डिंग करने के लिए प्रयोगात्मक अवलोकन (experimental observation to be record) इस क्रम में तीन बातों का ध्यान रखा जाएगा।

मौसमों के अनुकूल कितने लोकगीत है जो उस मौसम पर प्रकाश डालते हैं।

अलग–अलग वादियों का स्वरूप तथा गिरीवार और गिरीपार के मेलों के आयोजन पर्वो में क्याअन्तर है जैसे गिरीवार के पर्वों में मौलिकता नही है. तथा जहां पर पंजाब आदि क्षेत्रों का पूर्व प्रभाव है लोक संस्कृति विलुप्त है जबकि गिरीपार में हरवादी लोक संस्कृति का भरपूर खजाना है।

वो गीत अतीत से गाए जा रहे हैं तथा वर्तमान

में उन गीतों में पाश्चात्य प्रभाव रूप पहले पर्दे कीछाया देखने में आई है और मौलिकता विलुप्त होती जा रही हैं। इस हेतु स्वरलिपिवृद्ध महिलाओं, बुर्जुगों गायको से रिकॉडिंग कर सही रूप को अन्जाम देकर तुलनात्मक रूप से संवरने का प्रयास है। अवलोकन (observation) इन गीतों में लय तालो की बंदिशों की परख कर मौसमो के अनुकूल प्राचीन व्यवस्था के अनुसार प्रयोगात्मक रूप से स्थापित की जाएगी। इन गीतों के लोक साहित्य का भी मौसमों के अनुकूल समावेश का अध्ययन किया जाना अपेक्षित है। इनमें प्रयोग होने वाले

विभिन्न रागो व तालो पर कार्य करना हैं । क्योंकि ये देखना है कि कौन सी राग छाया है इस तकनीकी व्यवस्था में बुर्जुग कलाकारों महिलाओं ताल वादको से ऑडियो, विडिया रिकॉडिग कर सटीक प्रमाण एकत्र करने का सतत प्रयास रहेगा । विभिन्न गांव को दर्शातेवहाँ के मेलो में क्या उपलब्ध हुआ है । महिलाओं और बुजर्गो की गायकी को परख कर स्वरलिपि स्वारा जाएगा।

सिरमौर जिले में विभिन्न वादियों में जाकर गीतों को मौलिक रूप से संकलित किया जाएगा।इसके लिए अवलोकन शोध प्रवधि के माध्यम से गीतों व नृत्य का संग्रह किया जाएगा। इसके लिए स्मार्ट फोन रिकार्ड एवं कैमरे का प्रयोग किया जाएगा। (मेलो की सूची तालिका–2 में दी गई है)।

- गीतों की स्वरलिपि का प्रतिपादन करने तथा उनमें प्रयुक्त होने वाले तालों के बारे में श्री विद्यानंद सरेक जी (संगीत नाटक एकादमी से सम्मानित) से वाद–संवाद किया जाएगा।

मौसमों के अनुसार मेलों पर्वों की सूची जहाँ–जहाँ भिन्न गाँव में आयोजित होते हैं।

बसन्त (रसैलदी डाली रे रीत)	**ग्रीष्म ऋतु तोन्दे आषाढ़**	**वर्षा ऋतु चमासा**	**शरद ऋतु शरा अषाढ़ व कार्तिक**	**पतझड़ शडगी पोष**	**शिशिर हिउद मागी फाल्गुन**
बीशडी की सक्रांति देवठी भडोली कुन्थल, कोटले का बीशु, थामले का बीशु बीशु, हाव्वण का बीशु देवठी जात,	साटटू नृत्य कोटी टिम्बे की जात मेला जेठ–अषाड की सक्रांति को अषाड़ में मौण नृत्य शिलाई तौस के किनारे	रिहाली मेले ठण्डीधर की रिहाली। श्नोल मेले कुन्थल, नेई नेहटी, झीमी ठण्डी धार भूईरा की जन्म	कुफर की अष्टमी कुफर की दिवाली, कुन्थल की दिवाली, नोहरे धार की दिवाली एकादशी मेले देवठी, टेला, लेऊ	बूढ़ी दिवाली वावनल नोहरा कटोगड़ा	मगी मांग की सक्रांति को त्योहार बकरे कटते हैं रात–रात भर मुजरे लगते हैं।

बीशू रो साजो		अष्टमी	पालु		

6. **सहयोगी संस्थान (Collaboration)**–Nill

7. **संदर्भ ग्रन्थ सूची (Reference)**

- **देवराज, 2016**– सिरमौरी लोक संगीत पर सीमावर्ती क्षेत्रों का प्रभाव।

  शिमलाः हिमाचल प्रदेश युनिवर्सिटी
- **शर्मा, रमेश दत्त 1991**–सिरमौरी नृत्य गीतों का सांगीतिक अध्ययन, शिमला, हिमाचल प्रदेश युनिवर्सिटी।

- **सहगल, कृष्ण लाल,**

1985—सिरमौर जनपद के लोकगीतों में राग छाया।

शिमलाः हिमाचल प्रदेश युनिवर्सिटी

- **सहगल, कृष्ण लाल,**

1992—सिरमौर की लोक संस्कृति में लोक संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन। शिमलाः हिमाचल प्रदेश युनिवर्सिटी।

- **सहगल, निरजा,**

2000—2001—सिरमौरी जनपद के लोकगीतों में अनिबद्ध के गीतों का अध्ययन। शिमलाः हिमाचल प्रदेश युनिवर्सिटी।

- **गौतम, शर्मा,** व्यथितए

2015 काँगड़ा जनपदीय सांस्कृतिक परम्पराएँ

- **सूरत, 2015, चन्द्रौली,**

- **विजय कुमार, स्टाक्स,**

2012 हिमाचल प्रदेश की हो रही संस्कृति।

- **टीका राम शाह,** 2016

जोनसार, बाबर एतिहासिक संदर्भ

- **रामस्वरूप शाडिल,** 1992,

सोलन जिले के लोकसंगीत का विश्लेष्णात्मक अध्ययन

शिमला, हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी